# तृतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर संपन्न

**उदयपुर (राज.) :** यहाँ सेक्टर 14 स्थित सामुदायिक भवन में दिनाँक 3 जनवरी को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश का तृतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

फैडरेशन के उदयपुर जिलाध्यक्ष श्री कमलजी भोरावत ने बताया कि यह प्रशिक्षण शिविर तीन सत्रों में आयोजित किया गया। सभी अतिथियों का शब्दों द्वारा स्वागत फैडरेशन की जिला प्रभारी श्रीमती किरण जैन ने किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र के अध्यक्ष डॉ. उदयचंदजी जैन (पूर्व विभागाध्यक्ष-प्राकृत) थे। मुख्य अतिथि श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (राष्ट्रीय मंत्री), श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (प्रदेश अध्यक्ष) एवं श्री भोगीलालजी भदावत थे। उद्घाटनकर्त्ता श्री चन्द्रप्रकाश टेकचंदजी फलेजिया परिवार थे।

श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री ने आगामी वर्ष की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुये कहा कि शीघ्र ही फैडरेशन द्वारा सम्पूर्ण राजस्थान में अहिंसा श्रावकाचार रथ निकालकर धर्म की प्रभावना की जायेगी। प्रथम सत्र में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रशिक्षण देते हुये कहा कि कभी भी टीम वर्क में काम करते हुये अकेले श्रेय लेने की भावना छोड़नी चाहिये; श्रेष्ठ कार्य करके उसका श्रेय दूसरे व्यक्ति को देने से संगठन में व्यक्तियों का जुड़ाव बढेगा।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष श्री सुजानमलजी गदिया (स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजसेवी) एवं विशिष्ट अतिथि श्री कचरूलालजी मेहता व श्री हीरालालजी सिंघवी थे। इस सत्र में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि यदि संगठन में कार्य करने वाले युवा संस्कारवान होंगे तो संगठन उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा और उच्च शिखर को प्राप्त करेगा।

तृतीय सत्र के अध्यक्ष श्री दिनेशजी भट्ट (जिलाध्यक्ष-भाजपा) एवं विशिष्ट अतिथि श्री प्रमोदजी सामर (प्रदेश मंत्री - भाजपा) थे।

शिविर के मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षणाचार्य तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि हमें हमारे संगठन को आग लगाने वाला नहीं आग बुझाने वाला संगठन बनाना चाहिये। यदि 10 संस्कारवान युवा भी कोई रचनात्मक कार्य करेंगे तो उससे युवा एवं समाज जुड़ेगा। युवा यदि संस्कारवान होगा तो समाज उन्नति करेगा। डॉ. भारिल्ल ने फैडरेशन के सभी सदस्यों को फैडरेशन की रीति-नीति भी सिखाई।

इस अवसर पर विभिन्न शाखाओं के 250 अध्यक्ष एवं मंत्री उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री (प्रदेश उपाध्यक्ष) ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा (प्रदेश महामंत्री) ने किया।

# वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 (वीर नि. संवत् - 2537) 331 अंक : 7


## धन-धन जैनी साधु...

धन-धन जैनी साधु अबाधित, तत्त्वज्ञान विलासी हो।।टेक।।
दर्शन-बोधमई निज मूरति, जिनकों अपनी भासी हो।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अहंबुद्धि दुखदासी हो।।
धन-धन जैनी साधु...।। 1।।
जिन अशुभोपयोग की परनति, सत्तासहित विनासी हो।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो।।
धन-धन जैनी साधु...।। 2।।
छेदत जे अनादि दुखदायक, दुविधि बंध की फांसी हो।
मोह-क्षोभ रहित जिन परनति, विमल मयंक-कला सी हो।।
धन-धन जैनी साधु...।। 3।।
विषय चाह दव दाह खुजावन, साम्य सुधारस रासी हो।
'भागचन्द' पद ज्ञानानन्दी, साधत सदा हुलासी हो।।
धन-धन जैनी साधु...।। 4।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

# मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

**आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,**
**आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।**
**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,**
**जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

**(गतांक से आगे....)**

अहो, चैतन्य भगवान आत्मा ! जिसे लक्ष्य में लेते ही आत्मा में आनन्द सहित भावश्रुतरूपी अंकुर प्रगट होता है। भावश्रुत केवलज्ञानवृक्ष का अंकुर है; ज्ञान का यह अंकुर किसी राग के विकल्प में से नहीं आता। राग में से ज्ञान का अंकुर कभी नहीं हो सकता; आत्मा स्वयं बोधबीज स्वरूप है, उसी में से श्रुत का अंकुर आता है; उसके साथ जो शुद्ध दृष्टि है, वह सम्यग्दर्शन है और जितनी रागरहित स्थिरता हुई वह सम्यक्चारित्र है - ऐसा मोक्षमार्ग है। मोक्ष का मार्ग अर्थात् आनन्द का मार्ग। आतमराम निजपद में रमना आनन्द का मार्ग है; परपद में रमना मोक्षमार्ग नहीं है, उसमें आनंद नहीं है। रागादिक भाव तो परपद हैं, उसमें जो रमे अर्थात् उसमें जो सुख माने, उसको मोक्षमार्ग नहीं हो सकता। मोक्ष का मार्ग तो स्वपद में ही समाता है। काया और आत्मा की भिन्नता जानकर निजस्वरूप में जो समाये-लीन हुए - ऐसे निर्ग्रन्थ मुनिवरों का मार्ग ही भव के अन्त का उपाय है, उसी से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मोक्ष के मार्ग में भावश्रुतज्ञान होता है, वह भी आनन्द के स्वाद से भरपूर है और स्वसंवेदनरूप प्रत्यक्ष है। जैसे केवलज्ञान प्रमाण है, वैसे ही श्रुतज्ञान भी प्रमाण है, परोक्ष होने पर भी वह प्रमाण है और स्वसंवेदन में तो वह प्रत्यक्ष है। अपने आत्मा के अनुभव को साधक जीव स्वसंवेदनरूप प्रत्यक्ष प्रमाण से जानते हैं; उसमें उनको कोई संदेह नहीं होता। परोक्ष रूप प्रमाणज्ञान भी सन्देह से रहित होता है। जब केवलज्ञान की ही जाति का, स्वसंवेदन-प्रत्यक्षरूप भावश्रुतज्ञान हो, तभी मोक्षमार्ग होता है और उसी जीव को सच्चे निश्चय-व्यवहार नय होते हैं।

सम्यक्चारित्र मुख्य मोक्षमार्ग है।

चारित्र अर्थात् निजस्वरूप में स्थिरता। निजस्वरूप क्या है ? जिसके ज्ञान बिना स्थिरता नहीं होती।

संसार के कारणरूप शुभाशुभराग से निवृत्त होकर अपने शुद्ध चैतन्यस्वरूप में प्रवृत्ति होना सम्यक्चारित्र है। आत्मज्ञानपूर्वक ही ऐसा चारित्र होता है, यह अज्ञानी को नहीं होता - यह सूचित करने के लिए उसको 'सम्यक्' कहा है।

आत्मा ज्ञानधातु का वीतरागी निधान है, राग उससे भिन्न है। रागादि विकल्प तो अचिद्धातु है। अरे, इस अचिद्धातु से अज्ञानी को ऐसा भ्रम होता है कि वह विकल्प ही आत्मा है; परन्तु हे भाई ! उस विकल्प में चेतना और स्व-पर को जानने की जागृति नहीं है, जबकि तुम तो जागृत चेतनावाले शुद्ध चैतन्य भगवान हो, तुम्हारे में विकल्प का प्रवेश नहीं है। ऐसे अपने स्वरूप को पहचानकर अनुभव करने पर ही एकाग्रतारूप सम्यक्चारित्र होगा। स्ववस्तु के श्रद्धा-ज्ञान के बिना एकाग्र होगा किसमें ? चौथे गुणस्थान में चैतन्य का श्रद्धा-ज्ञान एक साथ होता है, वहाँ स्वरूपाचरणदशा भी होती है; मुनिदशारूप चारित्र छठवें-सातवें गुणस्थान में होता है। इसप्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञानसहित चारित्र ही मोक्षमार्ग है। चौथे गुणस्थान से उसका प्रारंभ होता है।

धर्मी जीव को सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान दोनों एक साथ होते हैं। सम्यग्दर्शन के साथ होनेवाले भावश्रुत प्रमाण में ही सच्चे नय होते हैं। मोक्षमार्ग का उद्यम करने वाले जीव को नव तत्त्व के निर्णय का विचार, सच्चे देव-गुरु-धर्म के स्वरूप का विचार इत्यादि शुभभाव होते हैं और भूत नैगमनय से इनको भी मोक्षमार्ग का कारण कहते हैं। सम्यग्दर्शन-ज्ञान सहित मोक्षमार्ग की इस भूमिका में भी ऐसे शुभभाव होते हैं, परन्तु उनसे विरुद्ध अर्थात् कुदेवादि को मानने का या जगत को किसी ने बनाया - ऐसे विपरीततत्त्व को मानने का भाव इस भूमिका में नहीं होता - ऐसा ज्ञान कराने के लिए इस भूमिका के शुभभावों को व्यवहार कारण कहा जाता है। यहाँ अकेला शुभराग ही नहीं है, अपितु सम्यक्ज्ञानपूर्वक शुद्धता का अंश भी साथ में है। इसप्रकार निश्चय-व्यवहार की संधि मोक्षमार्ग में रहती है। यहाँ निश्चय रहित व्यवहार की तो बात ही नहीं है, अपितु निश्चय सहित व्यवहार भी मोक्ष का सच्चा कारण नहीं है, उसको भी उपचार से ही कारण कहते हैं। सच्चा मोक्ष का कारण तो निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही है और वह आत्मा के अनुभवरूप है।

मोक्षमार्ग में पहले सम्यग्दर्शन और बाद में सम्यक्ज्ञान - ऐसा नहीं है एवं पहले सम्यक्ज्ञान व बाद में सम्यग्दर्शन - ऐसा भी नहीं है; शुद्ध आत्मा के अवलंबन से दोनों एक साथ ही होते हैं; तो भी दीपक और प्रकाश की तरह उनमें कारण-कार्यपना कहा जाता है; सम्यग्दर्शन को कारण और सम्यक्ज्ञान को कार्य कहा है; परन्तु वे आगे-पीछे नहीं हैं, दोनों साथ ही हैं। स्व-आत्मा को ज्ञेय बनानेवाले ज्ञान के साथ उसकी निर्विकल्प प्रतीति भी रहती ही है। जिसकी प्रतीति करते हैं, उसका सच्चा ज्ञान भी साथ में रहता ही है। बिना जानी हुई वस्तु की श्रद्धा तो गधे के सींग जैसी असत्य है।

सम्यग्दृष्टि के ज्ञान में ही निश्चय और व्यवहार - ऐसे दो नय होते हैं, सम्यग्दृष्टि के ये दोनों नय सच्चे हैं। अज्ञानी का एक भी नय सच्चा नहीं होता। धर्मी के दो नयों में से जो निश्चयनय है, वह तो सत्य वस्तुस्वरूप दिखाता है और व्यवहारनय निमित्त आदि का ज्ञान कराता है। श्रुतज्ञान में अनन्त नय समाते हैं; परन्तु साधक जीव उन अनन्त नयों को भेद करके नहीं जान सकता। प्रयोजन साधने के लिए संक्षेप से दो नय हैं - एक स्वाश्रित स्वरूप को जाननेवाला निश्चयनय और दूसरा पराश्रितभाव को जाननेवाला व्यवहारनय; इनमें निश्चयनय के अनुसार जो वस्तुस्वरूप है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान-अनुभव से मोक्षमार्ग सधता है, क्योंकि वह सत्यार्थ है।

देह से भिन्न केवल चैतन्य का ज्ञान हो, तब जीव को भावश्रुत-प्रमाणज्ञान होता है और वह निश्चय-व्यवहार दोनों को यथार्थ जानता है। जब तक शुद्धात्मा के अनुभवरूप भावश्रुत प्रगट नहीं होता और राग में तथा देह में एकत्वबुद्धि मिथ्यारुचि बनी रहती है, तब तक जीव का ज्ञान मोक्ष का साधक नहीं होता; परभावों से हटकर स्वद्रव्य के सम्मुख हो, तभी वह मोक्ष का साधक होता है। इसके बिना जितना भी शास्त्रज्ञान या शुभ आचरण हो, वह सब बहिर्मुख है। अंतर्मुख चैतन्यसत्ता दृष्टि में आये बिना मोक्ष का मार्ग नहीं खुलता और जहाँ मार्ग ही नहीं खुला, वहाँ **'यह निश्चयमोक्षमार्ग और यह व्यवहारमोक्षमार्ग'** - ऐसे विचार का अवकाश ही कहाँ है। 'मार्ग' हो, तभी उसमें निश्चय-व्यवहार लागू हो सकता है। अहा, अन्तर के सच्चे मार्ग को भूलकर संसार बाहर में रागादि को मार्ग मान रहा है; परन्तु श्रीगुरु कहते हैं कि हे भाई ! अनंतकाल से ऐसा भाव तो किया, फिर भी तुझे कुछ भी धर्म प्राप्ति क्यों न हुई ? अत: सोच और समझ कि वह मार्ग सच्चा नहीं है; सच्चा मार्ग उससे भिन्न ही है। वह मार्ग है - वीतराग-विज्ञान, जो कि जैन संत तुझे समझाते हैं।

**(क्रमश:)**

**नियमसार प्रवचन**

## विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

**णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।**
**ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।**

**इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।**
**एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं ।।41।।**

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

चार विभावस्वभावों के स्वरूप कथन द्वारा पंचमभाव के स्वरूप का यह कथन है।

**१. अवस्था में रहने वाली विपरीतता तथा अपूर्णता का नाश होकर स्वभाव जैसी ही पूर्णदशा पर्याय में प्रगट होने को क्षायिकभाव कहते हैं।**

''कर्मों के क्षय से जो भाव हो उसे क्षायिकभाव कहते हैं।''

आत्मवस्तु त्रिकाल स्वभाव से शुद्ध है, उसकी पर्याय में पुण्य-पाप के विकारी भाव होते हैं, वे भाव अन्तरस्वभाव में नहीं हैं; किन्तु परलक्ष्य से नवीन-नवीन होते हैं; उन्हें उदयभाव कहते हैं और उनके परिणाम में द्रव्यकर्म बँधते हैं। विकार उदयभाव है; अतः आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। आत्मा तो शुद्ध चिदानन्दस्वरूप है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान एवं उस आनन्दकंद स्वभाव में पूर्ण एकाग्रता करके विकार और अपूर्णता का अभाव तथा निमित्तरूप से कर्म का भी अभाव हो जाये - उसे क्षायिकभाव कहते हैं।

अपूर्ण ज्ञान का व्यय होकर पूर्ण केवलज्ञान प्रगटे, अपूर्ण दर्शन का व्यय होकर पूर्ण केवलदर्शन प्रगटे, अपूर्ण वीर्य का व्यय होकर पूर्ण अनन्तवीर्य प्रगटे, विपरीत श्रद्धा तथा विपरीत आचरण का नाश होकर पूर्ण प्रतीति और पूर्ण आचरण प्रगटे - उसे क्षायिकभाव कहते हैं; उसी समय उन-उन कर्मों का क्षय होता है।

साधकजीव को क्षायिकभाव प्रगट नहीं है और जो प्रगट नहीं है, उसका विचार करने पर राग होता है; धर्म नहीं होता।

केवलज्ञानादि की पर्यायें नवीन प्रगट होती हैं। क्षायिकभाव भी आत्मा का त्रिकाली स्वरूप नहीं है। अपूर्णता और विपरीतता का क्षय करके तथा निमित्त रूप से कर्मों का क्षय करके नवीन उत्पन्न होनेवाला भाव क्षायिकभाव है। निम्न दशावाले को वह भाव प्रगट नहीं है और जो भाव प्रगट नहीं है, उसका विचार करने पर राग की उत्पत्ति होती है; अतः क्षायिकभाव के आश्रय से धर्म नहीं होता।

केवली भगवान को क्षायिकभाव प्रगट हो गया है, उन्हें अब कुछ करना शेष नहीं रहा; पर जिनको अभी क्षायिकभाव प्रगट नहीं हुआ, उनको धर्म करने के लिए किसका आश्रय लेना चाहिए ? देव-गुरु-शास्त्र के आश्रय की तो बात ही नहीं है; क्योंकि उनके आश्रय से धर्म नहीं होता। अपने में होनेवाले दया-दानादि के भाव औदयिकभाव हैं - विकार हैं, विकार के आश्रय से अविकारी दशा नहीं होती। यहाँ तो कहते हैं कि औदयिकभाव का नाश होने पर प्रगट होनेवाले क्षायिकभाव का भी अवलम्बन करने योग्य नहीं है, क्योंकि वह एक समय की पर्याय है, नवीन प्रगट होती है, कर्म-क्षय की अपेक्षा रखती है, उसके लक्ष्य से राग होता है; धर्म नहीं होता।

केवलज्ञान प्रगट होने के पश्चात् भी केवलज्ञान में से केवलज्ञान प्रगट नहीं होता, वह तो ध्रुव स्वभाव में से समय-समय प्रगट होता है। अतः शुद्धस्वभाव परम पारिणामिकभाव ही आलम्बन करने योग्य है, क्षायिकभाव का आलम्बन उचित नहीं। यहाँ पर्यायदृष्टि छुड़ाकर द्रव्यदृष्टि कराने के लिए ऐसा कहा गया है कि जीव के क्षायिकभावों के स्थान नहीं हैं।

यह बात बहुत सूक्ष्म है। जीव लौकिक अभ्यास में जैसा समय लगाता है, वैसा इसमें लगाना चाहिए। आत्मा ज्ञान-दर्शन का पिण्ड है, वर्तमान में आकुलता है; आकुलता न होकर आनन्द प्रगट होना चाहिए। आकुलता टालकर परमानन्द दशा कैसे प्रगट हो ? यहाँ उसकी रीति बताते हैं।

भाई ! तू स्वभाव को छोड़ता है तो राग-द्वेष होता है और निमित्तरूप से कर्म बँधते हैं। सच्ची श्रद्धा-ज्ञान होने पर वह भूल टल जाती है और वीतरागता तथा केवलज्ञान होता है, कर्म भी टल जाते हैं। उस नई पूर्ण अवस्था को क्षायिकभाव कहते हैं; किन्तु वह अवलम्बन करने योग्य नहीं है। पूर्ण शुद्धस्वभाव परम पारिणामिकभाव का अवलम्बन करने से धर्मदशा का प्रारम्भ होकर पूर्णदशा अर्थात् क्षायिकभाव प्रगट होता है।

**२. क्षायोपशमिकभाव आत्मा में से निकल जाता है, इसलिये वह जीव का वास्तविक स्वरूप नहीं है ह्न उसके लक्ष्य से धर्म नहीं होता।**

''कर्मों के क्षयोपशम से जो भाव हो वह क्षायोपशमिकभाव है।''

जीव ने अमुक कर्मों का नाश किया है और अमुक कर्म अभी नाश करना शेष है - ऐसे कर्मों के क्षयोपशम के निमित्त से जीव की पर्याय में क्षयोपशमभाव होता है। आत्मभान होने के बाद भी सम्यग्ज्ञान आंशिक प्रगट हुआ है और अमुक शेष है - आवरण वाला है। क्षयोपशमभाव आत्मा की पर्याय है, वह आत्मा में से टल जाती है; अतः आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। उसके अवलम्बन से राग की उत्पत्ति होती है तथा पर्याय में से पर्याय प्रगट होती नहीं; अतः वह शरण लेने योग्य नहीं है। परमपारिणामिकभाव का अवलम्बन करने से धर्मदशा प्रगट होती है। क्षयोपशमभाव जीव की पर्याय होने पर भी वह जीव का वास्तविक स्वरूप नहीं है। अतः द्रव्यदृष्टि कराने के लिए कहा कि जीव के क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

**३. औदयिकभाव विकारीभाव है। उसके लक्ष्य से धर्म नहीं होता।**

''कर्मों के उदय से जो भाव होता है वह औदयिकभाव है।''

अपने शुद्धस्वभाव से चूककर कर्मोदय से कर्म का लक्ष्य करने पर होने वाला शुभ या अशुभभाव औदयिकभाव है - विकारीभाव है। चाहे जितना शुभभाव हो, तथापि वह औदयिकभाव है - विकार है; वह अपनी पर्याय होने पर भी आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं, अतः विकार के लक्ष्य से धर्म नहीं होता। इसलिये जीव के औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं; ऐसा कहकर विकार का लक्ष्य छुड़ाया है और शुद्धजीव का लक्ष्य करने के लिए कहा है।

**४. औपशमिकभाव अधूरी निर्मल पर्याय है, उसके लक्ष से धर्म नहीं होता।**

''कर्मों के उपशम से जो भाव होता है, वह औपशमिकभाव है।''

पानी में नीचे मैल बैठ जाये और ऊपर का पानी निर्मल हो जाये; उसीप्रकार कर्म सत्ता में तो है; परन्तु उदय में नहीं है, दबा हुआ है। आत्मा की अवस्था में मलिनता के दब जाने से उत्पन्न होनेवाला निर्मलभाव औपशमिकभाव है। उपशमभाव आत्मा की निर्मल पर्याय होने पर भी आत्मा में से निकल जाता है; वह आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। पर्याय के लक्ष्य से राग उत्पन्न होता है तथा अधूरी निर्मल पर्याय में से दूसरी निर्मल पर्याय प्रगट नहीं होती। निर्मलता प्रगटने का कारण परमपारिणामिकभाव है। अतः शुद्धजीव का लक्ष्य कराने के लिए जीव के उपशमस्वभावभाव के स्थान नहीं हैं - ऐसा कहा है। **(क्रमशः)**

# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** रागादिक की तथा ज्ञान की उत्पत्ति एक ही क्षेत्र और एक ही समय में होती है, फिर इन दोनों की भिन्नता किसप्रकार है ?

**उत्तर :** जिससमय और जिस क्षेत्र में रागादिक की उत्पत्ति होती है, उसीसमय और उसी क्षेत्र में ज्ञान की उत्पत्ति होती होने से अज्ञानी को भ्रम से वे दोनों एक ही प्रतीत होते हैं; फिर भी वे रागादिक और ज्ञान स्वभाव से भिन्न-भिन्न ही हैं, एक नहीं। बन्ध का लक्षण रागादि है और चैतन्य का लक्षण जानना है। इसप्रकार दोनों के लक्षण भिन्न हैं। रागादिक का चैतन्य के साथ एक ही समय और एक ही क्षेत्र में उपजना होता है; वह चेत्य-चेतक, ज्ञेय-ज्ञायकभाव की अति निकटता से होता है; किन्तु एक द्रव्यपने से कारण नहीं।

जिसप्रकार प्रकाश में आते हुए घटपटादि पदार्थ दीपक के प्रकाशपने की प्रसिद्धि करते हैं, घटपटादि की नहीं; उसीप्रकार जानने में आते हुए रागादिकभाव आत्मा के ज्ञायकपने की ही प्रसिद्धि करते हैं, रागादिक की नहीं; क्योंकि दीपक का प्रकाश दीपक से तन्मय है, इसलिए प्रकाश दीपक की प्रसिद्धि करता है। ज्ञान भी आत्मा से तन्मय होने से आत्मा को प्रकाशित प्रसिद्ध करता है, रागादिक को नहीं। काम, क्रोधादिभाव ज्ञान में ज्ञात होते हैं, वे वास्तव में रागादिक को नहीं प्रकाशते; क्योंकि रागादि ज्ञान में तन्मय नहीं है, किन्तु रागादिक से संबंधित ज्ञान अपने ज्ञान को प्रकाशित करता है। चैतन्य स्वयं प्रकाशकस्वभावी होने से परसंबंधी अपने ज्ञान को प्रकाशता है, पर को नहीं प्रकाशता। पहले कहा कि आत्मा पर को प्रकाशित करता है, वह व्यवहार से बात की थी; किन्तु वास्तव में देखा जाय तो आत्मा पर संबंधी अपने ज्ञान को ही प्रकाशित करता है।

समस्त जगत की वस्तुएँ ज्ञानप्रकाश में आ नहीं जातीं और ज्ञानप्रकाश भी जगत की वस्तुओं में चला नहीं जाता। जगत की वस्तुओं सम्बन्धी अपनी परप्रकाशकता ज्ञानप्रकाश को ही प्रकाशित करती है। इससे सिद्ध हुआ कि बन्धस्वरूप रागादि का और प्रकाशस्वरूप ज्ञान का लक्षण भिन्न होने से उनमें परस्पर एकत्व नहीं है। उन दोनों के स्वलक्षण भिन्न-भिन्न जानकर भगवती प्रज्ञाछैनी को उन दोनों की अंतरंगसंधि में पटकने से अर्थात् ज्ञान को आत्मा के सन्मुख करने से राग से भिन्न चैतन्य के अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव होता है।

समाचार दर्शन -

# राष्ट्रीय तीर्थयात्रा सानन्द संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ की राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित तृतीय तीर्थयात्रा के अंतर्गत इस बार दिनाँक 25 से 31 दिसम्बर, 2010 तक मालवा व निमाड़ के तीर्थों की यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में देश के 6 प्रांतों के अनेक शहरों से 400 यात्री सम्मिलित हुये।

यात्रा का विधिवत् उद्घाटन दिनाँक 25 दिसम्बर को इन्दौर में किया गया। उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कैलाशचंदजी वैद (अध्यक्ष-इन्दौर जैन समाज), श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर, श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर, श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, श्रीमती शशि सेठी जयपुर, श्रीमती रेणु सेठी जयपुर आदि मंचासीन थे। विद्वानों के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल मंचासीन थे।

इस अवसर पर फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा की संक्षिप्त रूपरेखा बताई तथा श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रियों को दी जाने वाली आकर्षक किट एवं उसमें रखी सामग्री की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की।

तीर्थयात्रियों के लिये उपयोगी सामग्री सहित तैयार की गई विशेष यात्रा किट का विमोचन संघपति परिवार ने किया। बस लीडर्स का बैच लगाकर स्वागत श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। संघपति परिवार (श्री प्रकाशजी सेठी, श्री कैलाशजी सेठी, श्रीमती शशि सेठी व श्रीमती रेणु सेठी) का साफा/तिलक/माल्यार्पण/श्रीफल/जाकेट/बैच पहनाकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' एवं श्री प्रकाशचंदजी सेठी ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री मुकेशजी जैन ने ढाईद्वीप जिनायतन की ओर से यात्रियों का स्वागत किया। यात्रा किट के स्पॉन्सर श्री सुभाषजी जैन नांगलाई दिल्ली थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

सात दिवसीय इस ऐतिहासिक यात्रा में इन्दौर के प्रमुख जिनमंदिरों के अतिरिक्त मक्सी, पुष्पगिरि, महावीर तपोभूमि उज्जैन, नेमावर, खातेगाँव, गंधर्वगिरि, कागजीपुरा, माण्डव, मानतुंगगिरि, सिद्धवरकूट, नमोकार धाम व पोदनपुर, ऊन, पार्श्वगिरि, बावनगजा आदि क्षेत्रों की वंदना की गई। जिनमंदिर दर्शनों के साथ-साथ विधान, पूजन, जिनेन्द्र भक्ति एवं प्रवचनों का विशेष लाभ मिला। सनावद एवं खातेगाँव में विशेषरूप से यात्रा संघ का स्वागत किया गया इसके अतिरिक्त अतिशय क्षेत्र गोम्मटगिरि, सिद्धक्षेत्र बावनगजा, अतिशय क्षेत्र मानतुंगगिरि, सिद्धवरकूट कमेटि द्वारा भी यात्रा संघ का हार्दिक स्वागत किया गया।

यात्रा संघ सहित डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की पुष्पगिरि में आचार्यश्री पुष्पदन्तसागरजी महाराज के साथ विशेष चर्चा वार्ता हुई, जिसमें महाराजश्री ने कहा कि हमने आपका साहित्य पढा है, वह निर्दोष है। आचार्यश्री ने पुष्पगिरि में होनेवाले पंचकल्याणक के लिये भी भारिल्ल बन्धुओं को विशेषरूप से निमंत्रण दिया।

दिनाँक 31 दिसम्बर को इन्दौर में समापन समारोह के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर, श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, श्री विलासजी काला यू.एस.ए., श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री सुभाषजी जैन दिल्ली एवं श्री अनिलजी रपरिया कोलकाता मंचासीन थे। समारोह में श्री अशोकजी जैन अहमदाबाद, श्री दिलीपजी सेठी कोलकाता, नियतिबेन जवेरी यू.एस.ए., श्रीमती ज्योति गाला मुम्बई, श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, विजया देवेअप्पा कर्नाटक, श्री संदीपजी शास्त्री दिल्ली आदि तीर्थयात्रियों ने अपने हृदयोद्गार अत्यंत भावुक होकर सुनाये, जिससे सारी सभा गद्गद् हो उठी। इसके पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं बस लीडरों में से राहुल जैन एवं विकास जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन हुआ।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने श्री मुकेशजी जैन इन्दौर एवं संघपति (सपत्नीक) का सम्मान किया तथा अपने उद्बोधन में सभी बसलीडरों आदि सभी सहयोगियों का विशेष रूप से अभिनन्दन किया। साथ ही संघ के साथ यात्रा कर रहे सभी विद्वानों का विशेष रूप से स्मरण किया, जिनकी उपस्थिति ने इस यात्रा में चार चांद लगाये।

अन्त में श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी यात्रियों, बस लीडरों, तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, इवेन्ट ऑर्गनाइजर एवं यात्रा को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्षरूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया।

संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

यात्रा की समाप्ति पर 31 दिसम्बर की रात्रि को नूतनवर्षाभिनन्दन के अवसर पर बावनगजा में बने विशाल पाण्डाल में मनोज शर्मा कामठान कला केन्द्र दिल्ली द्वारा 'आप कुछ भी कहो' कहानी संग्रह में समागत अभागा भरत और उच्छिष्टभोजी कहानियों के आधार पर भरत चक्रवर्ती के चरित्र का अभिनय और त्रियाचरित्तर कहानी का मंचन किया गया था; वह भी अपने आप में अलौकिक था। उसने सभी यात्रियों और स्थानीय लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

## मुम्बईवासियों का त्रि-दिवसीय जयपुर भ्रमण

**जयपुर (राज.) :** यहाँ दिनाँक 13 से 15 जनवरी,2011 तक जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल वालकेश्वर-मुम्बई से लगभग 70 सदस्य जयपुर भ्रमण हेतु पधारे। त्रि-दिवसीय जयपुर भ्रमण के दौरान जयपुर के प्रमुख जैन मंदिरों के दर्शन के अतिरिक्त दिनांक 13 जनवरी का दिन विशेष तत्त्वलाभ के लिये रखा गया, जिसमें प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'णमोकार महामंत्र' पर मार्मिक प्रवचन, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 'सुख की तलाश' विषय पर तार्किक विवेचन एवं तत्पश्चात् शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया। दोपहर में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'आर्ट ऑफ लिविंग' पर बहुत सरल व रोचक प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 14 जनवरी को यात्रा संघ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पहुँचा, जहाँ संघ के अध्यक्ष श्री रसिकभाई शाह मुम्बई, उपाध्यक्ष रंजनाबेन मुम्बई, मंत्री श्री अतुलभाई गांधी, कोषाध्यक्ष श्री अरविन्दभाई/प्रवीणभाई, संयोजक-सूत्रधार श्री सुरेशभाई का स्वागत सत्कार करते हुये समस्त आगन्तुक मेहमानों को सत्साहित्य भेंट किया गया।

**मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में -**

# पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

**मङ्गलायतन विश्वविद्यालय (अलीगढ-उ.प्र.) :** यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द एज्यूकेशनल सोसायटी एवं श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ द्वारा विश्व के प्रथम दिगम्बर जैन विश्वविद्यालय मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन गुरुवार, दिनाँक 16 दिसम्बर से गुरुवार 23 दिसम्बर, 2010 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर भव्य जिनालय में चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर की 51 इंची श्वेत, चतुर्मुखी, पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पञ्चकल्याणक पर प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचंदजी जैन अलीगढ, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. किरीटभाई गोसालिया अमेरिका इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री मङ्गलायतन, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित मुकेशजी शास्त्री तन्मय विदिशा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, ब्र. अमितजी जैन विदिशा, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित दीपकजी जैन भोपाल, श्री श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र.नन्हेभाई, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इंदौर आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

प्रतिष्ठाविधि का निर्देशन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मङ्गलायतन द्वारा किया गया।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के तीसरे दिन तीर्थङ्कर के गर्भ कल्याणक के अवसर पर देवों द्वारा पुष्पवृष्टि प्रतीकस्वरूप हेलिकॉप्टर द्वारा आकाश से की जाने वाली रत्नवृष्टि का दृश्य और तीर्थङ्कर की माता को दिखलाये जाने वाले सोलह स्वप्न तथा तीसरे काल में भोगभूमि व्यवस्था का प्रथम बार लेजर लाईट शो द्वारा किया गया प्रदर्शन सभी दर्शकों द्वारा सराहा गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती बीना जैन-श्री राजेन्द्रजी जैन, देहरादून को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री आनंद-रुचिका जैन शिकागो

थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री कमल-श्रीमती शशि बड़जात्या मुम्बई थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री अजितजी जैन-श्रीमती अनीता जैन बड़ौदरा थे। दिनाँक 17 दिसम्बर को इन्द्रप्रतिष्ठा विधि - यागमण्डल विधान का उद्घाटन डॉ. विनयकान्त-श्रीमती ज्योत्सनाबेन शाह, अमेरिका द्वारा किया गया।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री भभूतमल चम्पालालजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन डॉ. किरीटभाई गोसालिया परिवार, फीनिक्स (यू.एस.ए.) ने किया।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर मंचासीन विद्वानों का सम्मान करते हुये श्री पवनजी जैन (चेयरमैन-मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ गवरनर्स) ने कहा कि यहाँ पधारे हुये सभी विद्वान जिनशासन के सजग प्रहरी हैं। तीर्थङ्करों, वीतरागी संतों की परम्परा से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को प्राप्त दिव्यदेशना की परम्परा का निर्वहन करनेवाले सभी विद्वानों का सम्मान करके हम अपने को ही गौरवान्वित कर रहे हैं; क्योंकि विद्वानों का सम्मान किसी व्यक्ति विशेष का सम्मान नहीं; अपितु मां जिनवाणी का सम्मान है।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । महोत्सव में लगभग 15-20 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

## डॉ. चन्दुभाई कामदार का सम्मान

**राजकोट (गुज.) :** यहाँ दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनाँक 11 दिसम्बर को 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर डॉ. चन्दुभाई कामदार का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर विशाल जनसमुदाय एवं मुमुक्षु समाज की उपस्थिति में समाज के अध्यक्ष श्री सुमनभाई दोशी ने दि.जैन मुमुक्षु समाज के ओर से ऊँकाररूप चांदी का सम्मान चिह्न भेंट किया। इसके पश्चात समग्र ट्रस्टी मण्डल ने ग्रन्थाधिराज समयसार भेंट किया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने शॉल ओढाकर डॉ. चन्दुभाई का सम्मान किया। मंदिर के पूजन व्यवस्थापक श्री भूराभाई दरबार ने ज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ भेंटकर सम्मान किया।

समारोह में श्री सुमनभाई एवं चन्दुभाई के बड़े जंवाई श्री निरंजनभाई ने डॉ. चन्दुभाई द्वारा 72 वर्ष से चल रही अविरल तत्त्वयात्रा पर प्रकाश डाला और उनके द्वारा गुरुदेवश्री की सभाओं में किये जाने वाले तात्त्विक प्रश्नोत्तरों, चर्चा-प्रसंगों, जिनवाणी श्रवण-चिन्तन-मनन की अपूर्व भावना व निरन्तर आत्मकल्याण में लगे रहने रूप भावना का स्मरण किया। इस शतायु में भी डॉ. चन्दुभाई नियमित रूप से गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचनों का लाभ लेते हैं।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन दि.जैन मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री किशोरभाई लाखाणी ने किया।

**अभूतपूर्व उपलब्धि के साथ सम्पन्न हुआ**

# प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में शनिवार 9 से 14 जनवरी 2011 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

दिनाँक 9 जनवरी को आयोजित उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई एवं श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त शिविर के निर्देशक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, मुख्य प्रशिक्षक पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर व पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर तथा संयोजक पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया मंचासीन थे। सभी अतिथियों का तिलक व माल्यार्पण द्वारा स्वागत के उपरांत संयोजक पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया ने शिविर के आरंभ की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसप्रकार के शिविरों के आयोजन का उद्देश्य समाज को पर्याप्त संख्या में प्रतिष्ठाचार्य उपलब्ध कराना एवं विधि-विधान में व्याप्त आडंबर को दूर करना है।

मुख्य प्रशिक्षक पण्डित रमेशजी ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि मैं किसी की भी आलोचना नहीं करना चाहता; पर यह अनुभव करता हूँ कि प्रतिष्ठाकार्यों में सुधार की महती अवश्यकता है।

शिविर के निर्देशक डॉ. भारिल्ल ने प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर के आयोजन की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैराग्य के पोषक पंचकल्याणकों में भी अब राग का पोषण अधिक होने लगा है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि इसे संतुलित किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि इन नवोदित प्रतिष्ठाचार्यों को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में विधि का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण भी दिलाया जायेगा और उन्हें समारोहपूर्वक 'प्रतिष्ठाचार्य' पदवी दी जायेगी। साथ ही उन्होंने घोषणा की कि यदि आवश्यकता हुई तो हम शीघ्र ही निकट भविष्य में एक आदर्श पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जयपुर में आयोजित करेंगे।

डॉ. भारिल्ल ने मुख्य प्रशिक्षक बांझलजी का परिचय करते हुए कहा कि श्री रमेशजी पण्डित नाथूलालजी इन्दौर के निकटस्थ शिष्यों में से हैं। नाथूलालजी ने गुरुदेवश्री के सानिध्य में गुजरात में अनेक दिगम्बर पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें सम्पन्न करायी हैं। अत: रमेशजी इस विषय के निष्णात विशेषज्ञ हैं।

सभा का संचालन श्री पीयूषजी शास्त्री एवं मंगलाचरण विवेक जैन दिल्ली ने किया।

प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन प्रात: दोपहर की कक्षा में पंचकल्याणक के प्रत्येक दिन की विधि/क्रिया/मंत्रों का प्रशिक्षण दिया गया तथा रात्रि में इस संबंध में शंका-समाधान किये गये।

प्रथम दो दिन खातमुहूर्त, शिलान्यास, विधान, वेदी प्रतिष्ठा, कलशारोहण आदि कार्यक्रमों की विधि का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन 4 घंटे 30 मिनट तक कक्षायें चलती थीं।

प्रशिक्षण कक्षाओं में टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त अकलंक महाविद्यालय ध्रुवधाम बांसवाड़ा, धरसेनाचार्य सिद्धांत महाविद्यालय मुमुक्षु आश्रम कोटा के छात्र एवं ब्र.महेन्द्र शास्त्री इन्दौर, ब्र. रवि जैन ललितपुर, ब्र. श्रेणिक जैन जबलपुर, श्री विनोद जैन दलपतपुर, श्री भानु जैन कोटा, श्री ज्ञानभास्कर जैन आगरा आदि अनेक विद्वानों/त्यागी भाईयों ने भी प्रशिक्षण लिया।

दिनाँक 13 जनवरी की सायंकाल आयोजित इस शिविर के समापन के अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि यह शिविर विधि-विधान की शुद्धता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहा। क्रियाओं की उपयोगिता/औचित्य को जानकर प्रसन्नता का अनुभव हुआ। अभी तक हम अनेक क्रियायें करते ही नहीं थे, करते भी थे तो उसकी विधि और औचित्य नहीं समझते थे। अब यह जानकारी होने से यह कार्य और निर्दोष व प्रभावक रूप से सम्पन्न किये जा सकेंगे। ऐसा शिविर अवकाश के दिनों में लगे तो और भी सुविधा होगी।

मुख्य प्रशिक्षक पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर के सम्मान के पश्चात् सभी शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये गये।

इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन पीयूष जैन ने एवं मंगलाचरण श्री श्रेणिक जैन जबलपुर ने किया।

## सम्मान समारोह संपन्न

**इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित मालवा तीर्थयात्रा के अवसर पर दिनाँक 25 दिसम्बर को गोम्मटगिरि में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर का सम्मान किया गया।

समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या एवं विशिष्ट अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल', श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित सौरभजी शास्त्री व पण्डित गौरवजी शास्त्री थे।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने डॉ. हुकमचंद चैरिटेबल ट्रस्ट की उत्पत्ति एवं उसके द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। श्री अशोकजी बड़जात्या ने पण्डित सौरभजी शास्त्री का परिचय दिया। इस प्रसंग पर सौरभजी का शॉल ओढाकर, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र व 10 हजार रुपये की राशि भेंटकर सम्मान किया। श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' ने भी अपनी ओर से एक लाख रुपये से पुरस्कृत करने की घोषणा की।

इस अवसर पर पण्डित सौरभजी शास्त्री ने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल का आभार मानते हुए तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहने का संकल्प दोहराया।

# विधान, प्रभावना यात्रा एवं शिविर संपन्न

**इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन की ओर से गांधीनगर जिनमंदिर में दिनाँक 25 व 26 दिसम्बर को रत्नत्रय महामण्डल विधान एवं तृतीय आध्यात्मिक शिक्षिण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुरेन्द्रजी उज्जैन, डॉ. इन्द्रकुमारजी खण्डवा आदि विद्वानों के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

स्थानीय विद्वानों में पण्डित रतनलालजी शास्त्री, प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल, पण्डित सुशीलकुमारजी राघौगढ, पण्डित शशिकांतजी, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, पण्डित इंद्रजीतजी गंगवाल, पण्डित सुरेशजी पाण्ड्या, ब्र.हीराबेन, ब्र.कुन्तीबेन, विदुषी प्रमिलाबेन आदि का समागम प्राप्त हुआ।

दिनाँक 25 दिसम्बर को कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री प्रमोदजी दोशी सूरत एवं विशिष्ट अतिथि श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री आदित्यजी जैन सागर, श्री मलूकचंदजी जैन विदिशा व श्री अशोकजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल थे। कार्यक्रम के ध्वजारोहणकर्ता श्री कैलाशजी छाबड़ा मुम्बई थे।

इस अवसर पर रामाशा मन्दिर में डॉ. भारिल्ल द्वारा 'अहिंसा' पर विशेष व्याख्यान हुआ।

दिनाँक 26 दिसम्बर को ढाईद्वीप जिनायतन के 24000 स्क्वायर फीट मंदिर के द्वितीय स्लैब को रेडी मिक्स रोलर से भरा गया।

प्रात: 8 बजे ढाईद्वीप जिनायतन में प्रतिष्ठित होने वाली 844 प्रतिमाओं में से 149 जिनप्रतिमाओं की तृतीय विशाल प्रभावना यात्रा गांधी नगर दि. जैन मंदिर से ढाईद्वीप जिनायतन तक निकाली गई।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित सचिनजी जैन कोटा, पण्डित शीतलजी पाण्डेय उज्जैन, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन आदि ने शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार कराये।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –**

**वेबसाईट – www.vitragvani.com**

**संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**

**Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com**

# वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

**उदयपुर (राज.):** यहाँ हिरणमगरी सेक्टर-14 में दिनाँक 2 से 4 जनवरी तक श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित संजयजी शास्त्री मङ्गलायतन, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनाँक 2 जनवरी को यागमण्डल विधान हुआ। कलश स्थापना श्रीमती रूपादेवी गदिया एवं परिवार की वधुओं ने की। दिनाँक 3 जनवरी को घटयात्रा के माध्यम से वेदी शुद्धि एवं दिनाँक 4 जनवरी को विशाल शोभायात्रा द्वारा वेदी में भगवान विराजमान हुये।

इस अवसर पर जिनालय के मध्य भाग में कमलाकार वेदी पर 41 इंची धवल पाषाण की 4 खड्गासन प्रतिमाएँ (भूत, वर्तमान, भविष्य के प्रथम तीर्थंकर - क्रमश: श्री निर्वाणस्वामी, श्री आदिनाथस्वामी, श्री महापद्मस्वामी एवं विद्यमान तीर्थंकर श्री सीमंधरस्वामी)विराजमान की गईं। साथ ही भूत, वर्तमान व भविष्य के अंतिम तीर्थंकरों (श्री शान्तिजिनाय, श्री महावीरस्वामी व श्री अनन्तवीर्य स्वामी) की 9 इंची धातु की पद्मासन प्रतिमाएँ विराजमान की गयीं।

मंदिर का उद्घाटन श्री शांतिलालजी अखावत द्वारा किया गया। श्री सुजानमलजी गदिया परिवार द्वारा भगवान आदिनाथ एवं श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर द्वारा श्री सीमंधर भगवान को विराजमान किया गया। तत्पश्चात् बहनों द्वारा स्वाध्याय भवन में चारों अनुयोगों के ग्रन्थ विराजमान हुये। दिव्यध्वनि के चित्र का अनावरण भी किया गया।

जिनमंदिर का निर्माण श्री सुजानमलजी गदिया परिवार द्वारा कराया गया। कार्यक्रम के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री चेतनप्रकाशजी वैद उदयपुर थे। मंदिर के ऊपर शिखर कलश श्री दिनेशजी मोदी परिवार द्वारा स्थापित किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के कुशल निर्देशन में पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित सचिनजी उदयपुर, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य की कीमत कम करने हेतु एवं टोडरमल महाविद्यालय हेतु दानस्वरूप 1 लाख 55 हजार रुपये प्राप्त हुये।

# नवीन प्रकाशन

गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं लब्धिसार-क्षपणासार पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत टीका सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का हिन्दी अनुवाद डॉ.उज्ज्वला शहा ने किया है। गोम्मटसार कर्मकाण्ड एवं लब्धिसार-क्षपणासार के कुल पृष्ठ क्रमश: 1050 व 688 हैं। दोनों ग्रन्थों का मूल्य 175 व 125/- रुपये (डाकखर्च सहित) है। इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर संपर्क करें - पं. दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पू.), मुम्बई -22, फोन-(022) 24073581

# शोक समाचार

**1. फालेगांव-देशमुख (महाराष्ट्र) निवासी श्री अण्णासा माणिकसा गोरे** का दिनाँक 25 नवम्बर को 93 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपको कई बार स्वामीजी से मिलकर स्वाध्याय की प्रेरणा मिली थी। 1972 में महाराष्ट्र प्रांत का प्रथम शिक्षण शिविर आपके सानिध्य में फालेगांव में संपन्न हुआ था। आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक प्रा. कीर्तिजय गोरे के पिता एवं पण्डित अजय मृत्युंजय गोरे के दादाजी थे।

**2. मुम्बई-घाटकोपर निवासी श्रीमती अंजना नायक धर्मपत्नी श्री अजितकुमार डी.नायक** का दिनाँक 31 जुलाई 2010 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप स्व. सेठ श्री डालचंदजी टडैया ललितपुर की सुपुत्री एवं पण्डित देवकीनन्दनजी नायक मुम्बई की पुत्रवधु थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 201 रुपये प्राप्त हुये।

**3. कानपुर निवासी पं. महेशचंदजी जैन** का दिनाँक 23 दिसम्बर को 71 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी थे एवं तत्त्वप्रचार हेतु सदैव तत्पर रहते थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

**4. खड़ैरी निवासी श्री बुद्धिलालजी जैन** का दिनाँक 23 दिसम्बर को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक के. सी. शास्त्री के पिताजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 201/- रुपये प्राप्त हुये।

**5. जयपुर निवासी श्रीमती कमलादेवी जैन** माताश्री श्री ज्ञानचंदजी जैन (बैंक वाले) का दिनाँक 8 जनवरी 2011 को 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप टोडरमल स्मारक में नियमित स्वाध्याय करती थीं एवं शिविरों में भी अत्यंत रुचिपूर्वक लाभ लेती थीं। आपकी स्मृति में संस्था को 2500/- रुपये दानस्वरूप प्राप्त हुये।

**6. जयपुर निवासी श्री राजकुमारजी जैन** का दिनाँक 6 जनवरी को शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप मृदुभाषी, मिलनसार एवं सरलस्वभावी थे। आपकी धर्मपत्नी स्मारक शिविरों में नियमितरूप से उपस्थित रहती हैं। आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनुज जैन के ताऊजी थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

# बाल-युवा संस्कार शिविर संपन्न

**सेमारी-उदयपुर (राज.) :** यहाँ सकल दि.जैन समाज के सहयोग से दिनाँक 25 से 31 दिसम्बर 2010 तक प्रथम बाल-युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित तपिशजी शास्त्री के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। बालकक्षाओं का आयोजन पण्डित अर्पितजी शास्त्री, मङ्गलार्थी हिमालयजी जैन, मङ्गलार्थी प्रतीकजी जैन ने किया। प्रौढ कक्षा पण्डित जयेशजी शास्त्री ने ली।

रात्रि में प्रवचन के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। शिविर में स्थानीय विद्वान भंवरजी, श्री कांतिलालजी, श्री प्रकाशजी, श्री महावीरजी व श्री ताराचंदजी का विशिष्ट योगदान रहा। इसके अतिरिक्त अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं सन्मति महिला मण्डल ने भी अपना पूर्ण सहयोग दिया।